

श्री वर्द्धमान महावीर विधान

रचयित्री
आर्यिका विज्ञानमती

प्रकाशक
धर्मोदय साहित्य प्रकाशन
सागर (म. प्र.)

- कृति : श्री वर्द्धमान महावीर विधान
- रचयित्री : आर्यिका विज्ञानमती
- संस्करण : तृतीय, नवम्बर, 2014
- आवृत्ति : 1100
- ISBN : 978-93-82950-19-6
- प्राप्तिस्थान : धर्मोदय साहित्य प्रकाशन
जैन मंदिर के पास
बाहुबली कॉलोनी
सागर (म. प्र.) 094249-51771
Email-dharmodayat@gmail.com
website -jaindharmodaya.com
- नीतेश जैन
रमेशचन्द्र राकेशकुमार जैन (कालादेव वाले)
आरोन, जिला-गुना (म. प्र.) 9753742151
- मुकेशकुमार लालावत
तहसील रोड, पुलिस चौकी के पास
घाटोल, जिला-बाँसवाड़ा (राज.)
94141-02708
- मुद्रक : विकास आफसेट, भोपाल

अद्भुत फल

जहाँ राजस्थानी वसुंधरा को शरद ऋतु ने अपने आगमन से शोभायमान किया। वहीं भीण्डर निवासी श्रेष्ठी बालूलालजी की धर्म परायणा पत्नि श्रीमती कमलादेवी की गोद को कन्या रत्न ने अलंकृत किया। उस समय वह माँ नहीं जानती थी कि आज (कुँवार शुक्ला पंचमी, सन् 1963) जिसने मेरी गोद में जन्म लेकर मेरे घर-आँगन को महकाया है। वह कभी जिनवाणी माँ की गोद को भी हरा भरा करके समृद्ध करते हुए वृद्धिंगत करेगी। “होनहार विरवान के होत चीकने पात” बचपन में आचार्य शिवसागरजी महाराज के द्वारा रोपा गया धर्म का बीज माँ द्वारा समुचित खाद पानी पाकर पल्लवित हो उठा और अंत में सन् 1983 में आचार्य कल्प विवेकसागरजी महाराज का सहारा पाकर उन्हीं की छत्र छाया में पौधा बनकर लहलहा उठा और बन गया एक सघन छाँव वाला मधुर रसीले फलों वाला वृक्ष।

संसार के सभी वृक्ष एक ही प्रकार के फल देते हैं जैसे आम का वृक्ष आम, अनार का वृक्ष अनार लेकिन पूज्य आर्यिका श्री विज्ञानमती जी रत्नत्रयमयी आत्म वृक्ष एक ही प्रकार के नहीं विविध प्रकार के फल सारे जगत् को दे रहा है। कभी त्याग तप के रूप में, तो कभी तत्त्व चर्चा-चर्या के रूप में कभी प्रवचन व कक्षा के रूप में तो कभी साहित्य व सिद्धान्त ग्रन्थों के रूप में। आपकी लेखनी रूपी शाखा में जहाँ सिद्धान्त फल के रूप में “तत्त्वार्थ मंजूषा, चउबीस ठाणा प्रश्नोत्तर मंजूषा, पंच भाव प्रश्नोत्तर मंजूषा” फली तो वहीं नैतिक संसार के रूप में “संस्कार मंजूषा, शील मंजूषा” खिली। परिवार को सुखी बनाने के लिए “बहू कैसी, संस्कारित बेटी, समझदार बेटा, अच्छी सास” जैसी कृतियाँ पाकर सभी ने संतुष्टि पायी। घर में रहकर बिना प्रयोजन के पाप से बचने के लिए “अनर्थदण्ड क्या” तो घर में रहकर काम करते-करते पापों से बचने के लिए विवेक मंजूषा जैसा फल पाकर तो सभी अहिंसा धर्म में सराबोर हो रहे हैं। इन सबमें भी हमारे अनादिकालीन मिथ्यात्व को चकनाचूर करने के लिए सच्चे देव का स्वरूप कृति पाकर तो सारा जैन समाज जागृत हो उठा। इसी शृंखला में एक अद्भुत फल जिनभक्ति करने के लिए नाना प्रकार के विधान मिले उसी कड़ी में प्रस्तुत कृति है यह वर्द्धमान महावीर विधान

जिसके लिखने के पीछे छिपी है, पूज्य आर्यिका श्री की आंतरिक पीड़ा - जब-जब महावीर जयंती आती आपका मन हर्ष के साथ तड़फ उठता। हर्ष इसलिए होता कि भगवान् महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक महोत्सव है लेकिन तड़फन इस बात की होती कि आज सभी लोग बाहरी राग-रंग में फँसकर लौकिक कार्यक्रम तो कर लेते परन्तु एक-डेढ़ घंटे तक बैठकर भगवान् की भक्ति नहीं करते। भक्ति के लिए माध्यम की आवश्यकता होती है तभी पूज्य आर्यिका श्री के मानस पटल पर चिंतन की लहरें उभरी और भक्ति सरिता बह निकली वर्द्धमान महावीर विधान के रूप में। इसमें भी पूर्व लघु विधानों (बड़े बाबा का, पार्श्वनाथ, शांति विधान, सम्मोदशिखर विधान) की भाँति 72 अर्घ सहित पूजन और विरोधाभास अलंकार से अलंकृत जयमाला है। जिसको पढ़कर अर्चन कर हमें भगवान् के गुणों का परिचय मिलता है स्वरूप समझ में आता है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है पूर्व कृतियों की तरह यह कृति भी सभी को मधुर सुस्वादिष्ट भक्ति रूपी फल से तृप्त करेगी और भगवान् के मार्ग पर चलने के लिए उन जैसा बनने का आयाम देगी।

प्रस्तुत विधान का नाम श्री वर्द्धमान महावीर विधान पूज्य आर्यिका श्री ने ऋद्धि मंत्रों में और निर्वाण भक्ति की अञ्चलिका में पूज्यपाद आचार्य के अनुसार ही रखा है।

अंत में मैं भगवान् से यही प्रार्थना करती हूँ कि पूज्या आर्यिका श्री अनवरत अपनी लेखनी से माँ जिनवाणी का आँचल भरती रहें और अपनी आगमोक्त चर्या, ज्ञान, ध्यान, अध्ययन से स्व पर उपकार करती हुए लक्ष्य को प्राप्त करें।

इसी भावना से आपके पावन पुनीत चरणों में अपना तन-मन-जीवन समर्पण करते हुए कोटिशः वंदन-वंदन-वंदन.....।

प्रस्तुत कृति का सम्पादन संयोजन डॉ. ब्र. भरत भैया ने अपना अमूल्य समय देकर किया। उनकी श्रुत सेवा सराहनीय है पूज्य आर्यिका श्री का उन्हें शुभाशीष वे शीघ्र ही रत्नत्रय के धारी बनें।

संघस्थ

आर्यिका आदित्यमती

श्री महावीराय नमः

पीठिका

वर्द्धमानअतिवीर के, विधान की जो श्रेष्ठ ।
कहूँ पीठिका लोक में, जिनके गुण हैं ज्येष्ठ ॥

(ज्ञानोदय)

भील पुरुरवा ने मुनिवर, उपदेश सुना व्रत धारे थे ।
मद्य माँस मधु और साथ में, हिंसा आदिक त्यागे थे ॥
मरकर सुर में गया वहाँ से, आकर चक्री पुत्र हुआ ।
भ्रष्ट हुआ था जैनधर्म से, सो पापों का सूत्र हुआ ॥ 1 ॥

इस कारण ही भवों भवों में, भटक-भटक दुख पान किया ।
तथा योग से हिमगिरि पर आ, सिंहराज बलवान हुआ ॥
चारण ऋषि से सम्बोधन पा, उसको आतम ज्ञान हुआ ।
मुँह में पकड़े मृग को छोड़ा, धर्म अहिंसा धार लिया ॥ 2 ॥

मरकर पहले स्वर्ग गया फिर, आकर कनक पुंग नृप के ।
घर में कनकोज्ज्वल बनकर, उपदेश सुना मुनि पुंगव से ॥
मुनिव्रत धारण करके तप में, लीन हुए संन्यास लिया ।
समाधिपूर्वक मरण किया सो, सप्तम सुर में वास हुआ ॥ 3 ॥

भोग-भोगकर नगर अयोध्या, के राजा की शीलवती ।
रानी के तुम पुत्र हुए, हरिषेण नाम के पुण्यमती ॥
पुनः महाव्रत धारण करके, त्रय योगों का तप धारा ।
कर्म मूल को नाश करूँ यह, सोच पाप को दल डाला ॥ 4 ॥

लेकिन पूरे कर्म नाश नहीं, हो पाये सो स्वर्ग गये ।
महाशुक्र में सुर बन करके, विविध भाँति सुख शर्म गहे ॥
आकर राजा सुमित्र के घर, प्रिय नामक प्रिय पुत्र हुए ।
षट्खण्डों के अधिपति बनकर, जैनधर्म के सूत्र हुए ॥ 5 ॥

श्री क्षेमंकर तीर्थंकर के, चरण कमल की वन्दन कर।
 सुनी देशना तो वैरागी क्षण भर में ही मुनि बनकर॥
 करी तपस्या सहसों मुनि के साथ रही अघ शोषक जो।
 मोक्षमार्ग में कही गई है, मूलोत्तर गुण पोषक जो॥ 6॥

तो भी ओ हो मोक्ष न पाया, जिससे बारम स्वर्ग मिला।
 मिली अलौकिक सौख्य सम्पदा, सुरांगना का योग मिला॥
 लेकिन चित्त न रमता उनमें, संयम व्रत ही भाता था।
 मुनि बन करके मोक्षमार्ग में, चलने को ललचाता था॥ 7॥

आकर छत्राकार नगर के, मेधावी नृप शासक जो।
 नंद नाम था प्यारा उनका पुत्र, बना दुख नाशक वो॥
 प्रोष्ठिल मुनि की वाणी सुनकर, विरत भाव मन उपजा था।
 छह महिने तक अनशन धारा, आश्रय लेकर समता का॥ 8॥

और सुनो सब जीव लोक के, सुख पावे कल्याण करे।
 इनके दुख मिट जावे सबहिं, जीवन में सुख पान करे॥
 इसी भाव के कारण इनके, तीर्थंकर पद श्रेष्ठ रहा।
 सोलहकारण भावन भाकर, बाँध लिया जग ज्येष्ठ महा॥ 9॥

तथा मरणकर अच्युत सुर में, इन्द्र हुए सुख पाए थे।
 आकर के श्री कुण्डलपुर में, त्रिशला माँ को भाए थे॥
 ऐसे श्री महावीर वीर का, विधान लिखकर गुण गाऊँ।
 कोटि कोटिशः वन्दन करके, पाप कर्म से बच जाऊँ॥ 10॥

इति परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

विधान पूजा

स्थापन

(ज्ञानोदय)

वर्द्धमान श्री महावीर अतिवीर वीर का वन्दन है।
तीर्थकर सिद्धार्थ पुत्र का, करते हम अभिनन्दन है॥
भाग्य खिला सौभाग्य खुला, सो भाव हुए हैं पूजन के।
सन्मति त्रिशलानन्दन मेरे, बैठो उर के आसन पे॥

(दोहा)

करता आह्वानन प्रभो, सन्निधि है शुभ रूप।

स्थापन करके पूजता, हे त्रिभुवन के भूप॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमान महावीर जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमान महावीर जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमान महावीर जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(लय : श्री वीर महा अतिवीर.....)

ले स्वर्ण कलश में नीर, पूजा आज करूँ।

मम जनम विनाशो वीर! भव के काज तजूँ॥

जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।

मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमान महावीर जिनेन्द्राय नमः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं।

ये चन्दन खुशबू युक्त, लज्जित हो आया।

हो जाऊँ अघ से मुक्त, चरणों ले आया॥

जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।

मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमान महावीर जिनेन्द्राय नमः संसारतापविनाशनाय चंदनं।

मैं अक्षत उत्तम श्रेष्ठ, थाली भर लाया।

तव चरण चढ़ाना ज्येष्ठ, मेरे मन भाया॥

जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।

मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं....।

हे काम विनाशक! काम, मुझको दुख देता।

सो पुष्प चढ़ाकर आज, शिव का पथ लेता॥

जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।

मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं....।

ये घृत से निर्मित शुद्ध, नैवज मिष्ट रहे।

हो क्षुधा रोग अवरुद्ध, पूजन इष्ट रहे॥

जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।

मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं....।

ये मोह रहा है वीर, मुझको घेर लिया।

अब ज्ञान दीप जल जाय, दीपक भेंट किया॥

जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।

मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमान महावीरजिनेन्द्राय नमः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं....।

जो धूप दशांगी ज्येष्ठ, लेकर पद आवे।

वो कर्म जलावे शीघ्र, निज का पद पावे॥

जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।

मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमान महावीरजिनेन्द्राय नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं।

मैं श्रीफल एला लौंग, फल के थाल भरूँ।

अब अर्पित करके नाथ, शिव की चाल चलूँ॥

जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।

मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्राय नमः मोक्षफलप्राप्तये फलं।

जो जल-फल नैवज धूप, अक्षत चन्दन ले।
 तव चरण जजे आ भूप! काटे बन्धन वे॥
 जय वर्द्धमान तीर्थेश, गुण के सागर हो।
 मैं भक्ति करूँ सर्वेश, ज्ञान दिवाकर हो॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रायनमः अनर्घपदप्राप्तयेऽर्घ्यं।

प्रत्येक-अर्घ

अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाद युगल श्रीवीर।
 गुण-गण को मैं अर्घ दे, अब पूजूँ महावीर॥
 इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्/क्षिपामि॥

चौंतीस अतिशय

जन्म के दश अतिशयों के अर्घ

(ज्ञानोदय)

सप्त धातुमय तन है फिर भी, स्वेद न किंचित् झरता है।
 अहो अलौकिक तन को देखे, बहता सुख का झरना है॥
 जैसे चकवा स्वाति ऋक्ष के, जल से प्यास बुझाता है।
 त्यों सन्मति तव दर्शन से भवि, भव आपद सुलझाता है ॥ 1 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं निःस्वेदत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।

बचा न मल का नाम निशाना, वीर प्रभु के शुभ तन में।
 अति निर्मल ये कर्म मलों का, नाश करेंगे चेतन से॥
 रवि के नभ में उग आने पर, अंधकार नहीं रह पावे।
 महावीर की भक्ति करे तो, पाप पंक सब मिट जावे॥ 2 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं निर्मलत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।

तीन लोक से वत्सलता का चिह्न सुधवलिम खून रहा।
 हाथ-पैर के तलवे लेकिन, लाल रहे सुख पूर अहा॥
 सुमेरु पर्वत पर हे स्वामी! हुआ जन्म अभिषेक यदा।
 देव सुरासुर नाच उठे थे, पाप मिटा था पुण्य बढ़ा॥ 3 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं क्षीर गौरुधिरत्व जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।

उपांग सुन्दर अंग आपके, सबसे न्यारे प्यारे हैं।
 प्रथम रहा संस्थान देखकर, मिट जाते मद सारे हैं॥
 जिसे देखने शचिपति ने भी, सहस नयन को धार लिया।
 फिर भी तृप्त न हो पाया सो, फिर-फिर उनको देख जिया॥ 4॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं समचतुरस्र संस्थान जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-
 जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।

वज्रमयी है हड्डी वेष्टन कीले भी हैं वज्रमयी।
 लेकिन कोमलता इन जैसी, मिल न सकेगी और कहीं॥
 महावीर की देह-शक्ति यह, उत्तम में भी उत्तम है।
 शिवगामी हैं तद्भव सो हम, अर्घ चढ़ावे उत्तम ये॥ 5॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वज्रवृषभनाराच संहनन जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-
 महावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।

चक्रवर्ति अरु कामदेव अहमिन्द्र देव भी आ जावे।
 आप रूप को देख दाँत के नीचे अंगुलि दब जावे॥
 सौ-सौ युद्धों को जीता हो, वो भी सत्वर हारेगा।
 उससे जो भी छोड़ सभी को, वीर शरण में आयेगा॥ 6॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सौरुष्य जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो
 नमः अर्घ्यं।

कमल केतकी गुलाब चम्पा की खुशबू सब पीछे हैं।
 सुगंधशाली आप देह त्रय लोक सुरभि को जीते हैं॥
 सन्मति स्वामी की अर्चा से, अर्चित जग में हो जावे।
 आपद-विपदा के सब बादल, क्षणभर में ही छूट जावे॥ 7॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सौगन्ध्य जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो
 नमः अर्घ्यं।

एक सहस वसु लक्षण तन में, शुभ भविष्य के सूचक है।
 कहते मानो अल्प उग्र में, बने कर्म के मोचक ये॥
 महावीर जी तीन लोक के, चूड़ामणि जगवल्लभ है।
 भक्ति करे वह पा जावेगा, जिसको पाना दुर्लभ है॥ 8॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सौलक्षण्य जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो
 नमः अर्घ्यं।

तीन लोक को इक क्षण में ही उठा घुमाकर रख देवे।
किन्तु न ऐसा करते करुणाशाली सबके दुख मेंटे ॥
महावीर में रहा अतुल बल तुलना किससे हो पावे।
देख आपके बल को हम तो अर्घ चढ़ावे मुस्कावे ॥ 9 ॥

नैं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह अग्रमितवीर्य जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य।

जन्मजात औ वचन आपके, प्रिय हित नन्दन दायक ही।
होते सबको सुख देते हैं, होते पाप प्रणाशक ही॥
कृपासिन्धु श्री महावीर के, करुणा सागर जिनवर के।
चरण पूजता वह पा जाता, यश वैभव सब त्रिभुवन के ॥ 10 ॥

नैं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह प्रियहितवादित्व जन्मातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य।

केवलज्ञान के दस अतिशयों के अर्घ

(नरेन्द्र)

सौ-सौ योजन चारों दिशि में, सुभिक्षता हो जावे।
रोग शोक दारिद्र व्याधियाँ, निकट नहीं आ पावे॥
वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।
भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे ॥ 11 ॥

नैं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह गव्यूतिशत चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षय जातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य।

नभ पथ से तुम विहार करते, साथ चले मुनि स्वामी।
घाति कर्म चउ नाश हुए सो, अतिशय है जगनामी॥
वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।
भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे ॥ 12 ॥

नैं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह गगनगमनत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य।

भोजन पानी फल-फूलों को, नहिं खाते अतिवीरा।
तो भी तन है पुष्ट आपका, अचरज हमको धीरा॥

वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।

भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे ॥ 13 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं भुक्त्यभाव घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-
जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

चाहे कितनी दूरी तक तुम, गमन करोगे देवा।

प्राणीवध नहिं हो सकता हम, करें आपकी सेवा ॥

वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।

भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे ॥ 14 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अप्राणिवधत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-
जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

कोई बाधा किसी भाँति की, प्रभु पर ना कर पावे।

इसीलिए उपसर्ग रहित यह, अतिशय हमको भावे ॥

वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।

भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे ॥ 15 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-
जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

मुख तो केवल एक रहा पर, दिखे सभी को भाई।

समवसरण में तुम्हें देखकर, मिटे पाप दुखदाई ॥

वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।

भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे ॥ 16 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-
जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

तीनलोक की सब विद्याएँ, चेरी बनकर तेरे।

चरण खेलती पूज्य आपके, भक्त सौख्य से खेले ॥

वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।

भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे ॥ 17 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वविद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-
जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

परमौदारिक देह रहा सो, नहीं पड़ेगी छाया।
 वीर चरण की पूजा कर लो, मिट जायेगी माया ॥
 वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।
 भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे ॥ 18 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अच्छायत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-
 जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

नहीं झपकती पलकें तो भी, नहीं थकती हैं आँखें।
 इक क्षण के बस दर्शन से ही, खिल जाती हैं वाँछें ॥
 वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।
 भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे ॥ 19 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अपक्षमस्पंदत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीर-
 जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

केश न बढ़ते नख का बढ़ना, रुका आपके स्वामी।
 अर्पित होकर बने पुजारी, मेटे पाप निशानी ॥
 वर्द्धमान अतिवीर वीर की, जो पूजा रचवावे।
 भव को तजकर परम्परा से, मोक्षमहल को पावे ॥ 20 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं समाननखकेशत्व घातिक्षयजातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-
 महावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

देवकृत अतिशयों के अर्घ (चौपाई)

अर्द्धमागधी तेरी भाषा, श्रोता पाते आनन्द खासा।
 महावीर को भजने वाला, शीघ्र लगावे भव को ताला ॥ 21 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-
 महावीर जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

वैर भूलकर जग के प्राणी, करे मित्रता मिल सुखदानी।
 वीर प्रभु के भक्त सभी के, मित्र बनेंगे सुनो अभी वे ॥ 22 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सर्वजन मैत्री भाव देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री
 वर्द्धमानमहावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

सब ऋतुओं के फल लग आवे, पापी के भी अघ धुल जावे।
 आपद विपदा सब मिट जावे, परम्परा से शिव को पावे ॥ 23 ॥

नँ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं सर्वर्तुफलादि शोभित तरुपरिणाम देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

दर्पण जैसी निर्मल भू हो, पूजा करके निर्मल तू हो।

जो भज लेगा महावीर को, बन जायेगा महावीर वो ॥ 24 ॥

नँ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं आदर्शतल प्रतिमारत्नमयी देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-महावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

पवन चलेगा सही दिशा में, भक्त रहेगा सही दशा में।

त्रिभुवनपति की भक्ति करे जो, मुक्तिवधू को शीघ्र वरे वो ॥ 25 ॥

नँ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं विहरणमनुगतवायुत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-महावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

समवसरण जब आता तेरा, घर-घर में हो सुख का डेरा।

श्रद्धा करले पूज्य वीर की, मिट जावेगी सभी पीर जी ॥ 26 ॥

नँ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं सर्वजन परमानन्दत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-महावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

कंकर कण्टक दूर करेंगे, वायु देव आ पास रहेंगे।

दुख के काँटें शीघ्र हटेंगे, जो सन्मति की भक्ति करेंगे ॥ 27 ॥

नँ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

गंधोदक की वर्षा करते, वीर भक्त नित सुख से भरते।

भज ले भज ले भज ले भाई, बन जावेगा सुख का साई ॥ 28 ॥

नँ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं मेघकुमारकृत गन्धोदकवृष्टि देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-महावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

सहस्र पत्र के पद्म रचेंगे, स्पर्श न लेकिन वीर करेंगे।

पंकज सा निर्लिप्त रहे जो, तो क्यों भव के दुःख वरे वो ॥ 29 ॥

नँ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं पादन्यासेकृत पद्मानि देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-महावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

फसल धान्य से झुक जाती है, ईति भीति सब भग जाती है।

गुण से भरकर नम्र बनेगा, वीर प्रभु का भक्त बनेगा ॥ 30 ॥

नँ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अहं फलभारनम्रशाली देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमान-महावीर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

वीर पधारे जहाँ जहाँ पर, निर्मल होता गगन वहाँ पर।

आपद के सब बादल छटते, वीर भक्त के पातक घटते ॥ 31 ॥

नँ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं शरत्कालवन्निर्मल गगनत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।

आओ आओ आओ कहकर, बुला रहे हैं सबको मिलकर।

अतिशय माना सुरकृत प्यारा, पूजक को फल मिलता न्यारा ॥ 32 ॥

नँ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं एतैतैति चतुर्निकायामर परस्पराह्वानन देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।

शरद काल के बादल सम ही, होती दिशियाँ निर्मलतमजी।

पूजे अन्तिम तीर्थकर को, बन जावेगा क्षेमंकर वो ॥ 33 ॥

नँ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं शरन्मेघवन्निर्मल दिग्विभागत्व देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।

सहस आर का धर्म चक्र जो, प्रभु के आगे चलता है वो।

सच्चे चक्रेश्वर प्रभु वीरा, नाम जपे सब जग के धीरा ॥ 34 ॥

नँ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं धर्मचक्रचतुष्टय देवोपनीतातिशय गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।

पंचकल्याणक के अर्घ

(घत्ता एवं दोहा)

तब रत्न सुबरसे, मन भी हरषे, गर्भ पधारे आप यदा।

हम पूजा करते, सुख से भरते, ऐसा मिलता भाग्य कहाँ ॥

सुर देवी आकर, सेवा पाकर, माँ की अति हरषाती है।

हम कल्याणक पा, चरणों में आ, पूजे प्रभु सुख पाती हैं ॥

माह रहा आषाढ़ का, तिथि छठवीं सुखदाय।

अर्घ चढ़ाऊँ वीर को, मेरे भव घट जाय ॥ 35 ॥

नँ हीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं गर्भकल्याणकमण्डित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं...।

प्रभु भू पर आये, दर्शन पाये, शचि ने सबसे पहले तो।

मिथ्यातम भागा, आतम जागा, मोक्षमार्गमय बनने को ॥

हम नाचे गावें खुशी मनावें, जन्म कल्याणक आज हुआ।

ये अर्घ चढ़ाने पाप घटाने, भाग्य उदय यह खास हुआ ॥

चैत माह की तिथि रही, अट्टाइसवीं जान'।

महावीर को अर्घ दूँ, पूज्योत्तम यह मान ॥ 36 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं जन्मकल्याणकमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं....।

प्रभु दीक्षा धारे, वस्त्र उतारें, लौकान्तिक भी आये थे।

सुर उठा पालकी धर्मपाल की, मन ही मन हरषाये थे॥

वे मौन सुधारें, काम सुधारें, जन जन उनके वन्दन से।

मम पाप कटेंगे सौख्य बढ़ेंगे, भाव बनेंगे चन्दन से॥

मार्गशीर्ष की पूज्य है, दसवीं तिथि यह आज।

तप कल्याणक वीर का, पूजूँ बनकर दास ॥ 37 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं तपकल्याणकमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं....।

जब ज्ञान उपजता लोक हरषता, समवसरण भी बनता है।

शुभ दिव्य देशना, छोड़ वेदना, सुनती सारी जनता है॥

तज घर कारा को, सुत दारा को, देश महाव्रत पाते जो।

शुभ मोक्षमार्ग पर, प्रतिपल चलकर, मोक्षमहल में जाते वो॥

दशमी है वैशाख की, शुक्ल पक्ष की श्रेष्ठ।

पूजे सन्मति वीर को, बनता जग में ज्येष्ठ ॥ 38 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं ज्ञानकल्याणकमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं....।

प्रभु मोक्ष पधारे, भव नहीं धारे, पुनः लोक में आकर के।

वे भव को तजते, सुख में रमते, शुद्ध अवस्था पाकर के॥

वसु कर्म नहीं है, सौख्य सही है, आठ गुणों को पाया है।

निधि निज की पायी, आनन्ददायी, हमने शीश झुकाया है॥

कृष्णा कार्तिक माह की, रही अमावस श्याम।

मोक्ष गये अतिवीर सो, लगती है अभिराम ॥ 39 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मोक्षकल्याणकमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं....।

आठ प्रातिहार्य के अर्घ

(लय : कहाँ गये चक्री.....)

शोक मिटाता सब जीवों का रोग मिटाता है।

अशोक प्यारा नाम तभी है, पूज्य बनाता है॥

महावीर की पूजा से तो, पाप मिटेंगे रे।

भक्ति बढ़ा ले जग के वैभव साथ रहेंगे रे ॥ 40 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अशोकवृक्षप्रातिहार्यमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य....।

तीन छत्र जो चाँदी के ये, शिर पर शोभित है।

उनमें लटके मोती जिन पर, सब जन मोहित है ॥

वीर प्रभु की छत्रच्छाया, हमने पायी है।

धन्य धन्य कह सारी जनता, चरणों आयी है ॥ 41 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं छत्रत्रयप्रातिहार्यमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य।

चौंसठ चामर स्वर्ग लोक के, इन्द्र ढोरते हैं।

महावीर के भक्त शीघ्र ही, कर्म तोड़ते हैं ॥

प्रातिहार्य गुण रत्नाकर ने, कैसे पाया है।

तीर्थकर जो कर्म उदय में, वो ही आया है ॥ 42 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चतुषष्टि चामरप्रातिहार्यमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य....।

अन्तरंग का शुद्ध भाव ही, बाहर आया है।

जगमग करता भामण्डल बन, सबको भाया है ॥

सन्मति स्वामी आप भक्त को, सन्मति मिलती है।

चरणकमल के दर्शमात्र से, दुर्गति टलती है ॥ 43 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं भामण्डलप्रातिहार्यमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य।

साढ़े बारह करोड़ बाजे, ढम ढम बजते हैं।

देव बजाते एक ध्वनि में, प्यारे लगते हैं ॥

दुन्दुभि बाजे कहते शिव के, नायक आये हैं।

महावीर की पूजा ही बस, मन को भाये हैं ॥ 44 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं दुन्दुभिप्रातिहार्यमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य....।

रंग रंगीले भाँति भाँति के, पुष्प बरसते हैं।

जिन्हें देखकर पापी के भी, भाग्य पलटते हैं ॥

महावीर अतिवीर देव की, महिमा न्यारी है।

चरण पड़े तो पल में पाते, सुख की क्या रीति वे ॥ 45 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य।

सिंहासन यह बना स्वर्ण से, रत्न जड़े न्यारे।
 उसके ऊपर अधर विराजे, महावीर प्यारे॥
 सिद्ध शिला पर आसन होगा, भक्ति करेगा जो।
 लौट न आवे भूमण्डल पर, वहीं रहेगा वो ॥ 46 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं सिंहासनप्रातिहार्यमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः
 अर्घ्य।

अष्टादश है महा, सात सौ, छोटी भाषा में।
 दिव्यध्वनि से सर्व तत्त्व को, प्रभुवर समझावे ॥
 वीर प्रभु अतिवीर आपकी, ध्वनियाँ अद्भुत है।
 पूजन करके हमने सारे, पाये सदगुण है ॥ 47 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं दिव्यध्वनिप्रातिहार्यमण्डितश्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः
 अर्घ्य।

अनन्त दर्शन अनुपम अद्भुत, तुमने पाया है।
 दर्शन का आवरणी माना, उसे सताया है ॥
 अनन्त दर्शन महावीर का, रहा अलौकिक है।
 भक्ति करे जो परम्परा से, बने अलौकिक वे ॥ 48 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अनन्तदर्शन गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः
 अर्घ्य।

रहा अंत से रहित अमित, जो ज्ञान सुपंचम है।
 ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, पाया उत्तम ये ॥
 पाने केवलज्ञान आप सम, चरणों आये हैं।
 सब देवों को देखा उसमें, आप सुहाये हैं ॥ 49 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अनन्तज्ञान गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः
 अर्घ्य।

आत्मिक सुख जो नहीं पराश्रित स्वाश्रित भाया है।
 महावीर ने शुक्लध्यान से उसको पाया है ॥
 कुण्डलपुर के गौरव तेरी, गाथा जो गाते।
 गर्व छोड़कर उत्तम मार्दव, वृष को वो पाते ॥ 50 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अनन्तसुख गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य.....।

तीन लोक के सभी द्रव्य अरु, पर्यायें जानो।

लेकिन थकते नहीं कभी भी, यही वीर्य मानो ॥

विपुलाचल के महावीर को, वंदन करता जो।

भव भोगों के क्लेश छूटते चंदन बनता वो ॥ 51 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह अनन्तवीर्य गुणधारक श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य.....।

18 दोष रहित भगवान के अर्घ

(दोहा)

मोह कर्म का नाम ना, साता है भरपूर।

भूख लगे कैसे किया अघ को चकनाचूर ॥

कूल भूप ने वीर को प्रथम दिया आहार।

हुए पंच आश्चर्य तब, पाया शिव का द्वार ॥ 52 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह क्षुधादोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य।

प्यास न आती पास है नहीं हेतु अवशेष।

अर्घ चढ़ाकर हे प्रभो, धारूँ मैं जिनवेष ॥

नाच-नाच अतिवीर का, जो करते गुणगान।

स्वर्ग लोक को प्राप्त कर, करते शिव सुख पान ॥ 53 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह पिपासादोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य।

तीर्थकर है आप सो, जरा न आवे पास।

जरा दोष को नाशकर, पद पाया है खास ॥

चाँदनपुर के वीर को, जो पूजे त्रय काल।

अजर-अमर पद प्राप्त हो, फिर नहिं आवे काल ॥ 54 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह जरादोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य।

गर्भ सम्मूर्च्छन जन्म है, और रहा उपपाद।

तीनों के ही नाश से, हुआ मोक्ष उत्पाद ॥

एक सहस्र वसु कलश से, सुमेरु पर अभिषेक।

जन्म जात जिन वीर का, तृप्त न होते देख ॥ 55 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह जन्मदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य।

मरण रहा अति कष्टमय, कष्ट किए सब साफ।
पण्डित-पण्डित मरण कर, अमर हुए है आप॥
त्रिशलानन्दन वीर के, स्पर्श करे द्वय पाद।
सम्यग्दर्शन धान्य में, मिल जाता है खाद॥ 56 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मरणदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।
भोग रोग के हेतु हैं, नहीं करते तुम भोग।
स्वस्थ हुई है चेतना, नाश हुआ है रोग॥
सन्मति से सन्मति मिले, मिले सौख्य भण्डार।
द्वन्द-फन्द को छोड़कर, यदि आये प्रभु द्वार॥ 57 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं रोगदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।
इष्ट वस्तु में जीव के, रति उपजे निस्सार।
रति को नाशा पा लिया, आतम जो है सार॥
रहे पुत्र सिद्धार्थ के, महावीर जिनराज।
कर ले सेवा एक क्षण, सध जावे सब काज॥ 58 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं रतिदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।
तन ममता से भय बढ़े, शरण ढूँढ़ता जीव।
निर्भय तुम ही शरण हो, भय की मेटी नींव॥
सेवा करती देवियाँ, माता की दिन-रात।
गर्भ विराजे वीर सो, रही अलौकिक बात॥ 59 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं भयदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।
अचरज क्यों उपजे तुम्हें, झलक रहा सब लोक।
विस्मय लेश न अब बचा, सो पूजे त्रयलोक॥
पन्द्रह महिने रत्न की, वर्षा करते देव।
कल्याणक जब प्रथम हो, खोने भव की टेव॥ 60 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं विस्मयदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।
तीन लोक में आपका, शत्रु नहीं है शेष।
सबके सुख की भावना, भायी जो सुखवेष॥
महावीर के भक्त से, करे न कोई द्वेष।
पुण्यवान वह शीघ्र ही, धारेगा जिन वेष॥ 61 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं द्वेषदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।

स्वेद नहीं आवे कभी, आप देह में नाथ।
तब तो पाया आपने, मुक्ति रमा का साथ॥
कुण्डलपुर के वीर का, नित्य करे गुणगान।
झंझट कर्मों के मिटे, करे मोक्ष का पान॥ 62॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं स्वेददोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।
मन का यदि मिलता नहीं, तो उपजेगा खेद।
आवश्यकता है नहीं, इसीलिए निर्वेद॥
श्रेणिक नृप ने पूछकर, साठ सहस्र शुभ प्रश्न।
उत्तर पाये वीर से, रहूं भक्ति में मस्त॥ 63॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं खेददोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।
ज्ञान नाशकर मोह जो, हावी सब पर आज।
उसको नाशा वीर सो, निर्मोही है आप॥
महावीर के चरण में, हुआ समर्पित मोह।
तब तो पूजक शीघ्र ही, पा जाता है मोक्ष॥ 64॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मोहदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।
निद्रा के वश में हुआ, सब कुछ जाता भूल।
मूल मिटाया वीर ने, नहीं बचा यह शूल॥
नहिं सोते नहिं जागते, महावीर अतिवीर।
नींद मिटेगी पूज ले, मिटे पाप के तीर॥ 65॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं निद्रादोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।
चिन्ता उसको ही लगे, परिग्रह होवे पास।
मूर्च्छा त्यागी सो बने, सभी आपके दास॥
महावीर को अर्च ले, चिन्ता होगी दूर।
हो जावे निश्चित वो, पा जावे सुख पूर॥ 66॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चिन्तादोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।
कारण जो हैं शोक के, दिया सभी को रोक।
इसीलिए अतिवीर को, क्यों होवेगा शोक॥
महावीर के भक्त के, कभी न होते पाप।
तो क्यों पावे शोक वो, सुख पावे निर्माप॥ 67॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं शोकदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्यं।

गुरु लघु में अंतर मिटा, पायी समता ज्येष्ठ ।
 तभी बचा नहिं मद प्रभु, निर्मद तुम ही श्रेष्ठ ॥
 सन्मति का जो भक्त है, मद मिट जाता शीघ्र ।
 पुण्यवान के मध्य में, पद पाता है अग्र ॥ 68 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह मददोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य ।

अंतरंग बहिरंग के, नहीं परिग्रह पास ।
 कैसे उपजे राग ये, सुख पाया है खास ॥
 जो पूजेगा वीर को, ग्रह बाधा मिट जाय ।
 लक्ष्मी भी आग्रह करे, किन्तु न मूर्च्छा आय ॥ 69 ॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह रागदोषरहित श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः अर्घ्य ।

गणधर देव का अर्घ्य

गौतम कुल में ब्राह्मण के घर, जिनका अन्तिम जन्म हुआ ।
 इन्द्रभूति का, गौतम गणधर, पूज्य नाम विख्यात हुआ ॥
 महावीर के मोक्ष गमन के दिन ही सायंकाल अहो ।
 पाया केवलज्ञान सुपंचम, गुण गा सकता कौन कहो ॥
 गौतम आदिक जो रहे, ग्यारह गणधर देव ।
 सबको पूजूँ अर्घ से, मेरी नैया खेव ॥ 70 ॥

ॐ ह्रीं गौतमादि एकादशगणधरेभ्यो नमः अर्घ्य ।

पावापुर सिद्धक्षेत्र का अर्घ

पावापुर में पद्म सरोवर, कमल खिले हैं मनमोहक ।
 ठीक बीच में शिला सुशोभित, जहाँ विराजे जगमोहक ॥
 शेष बचे जो कर्म सभी को, नाश मोक्ष को पाया था ।
 अर्घ चढ़ाऊँ पूजा करने, स्वर्ग लोक भी आया था ॥ 71 ॥

ॐ ह्रीं पावापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः अर्घ्य ।

पूर्णार्घ्य

हे वीर जिनन्दा त्रिभुवन चन्दा आनन्द कन्दा आप रहे ।
 हम पद आकर के, गुण गाकर के, निज पाकर के पाप हरे ॥

जो तुमको पूजे, भव से छूटे, अघ से रूठे जाप करे।
 वो शिव में जावे निज को पावे, निज में आवे ताप तजे ॥ 72 ॥
 नैं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाप्यमंत्र

नैं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः ।

(108 बार जाप करें)

जयमाला

जयमाला अतिवीर की, मैं गाऊँ दे ताल ।

फल में चाहूँ हे प्रभो, मिट जावे भव चाल ॥ 1 ॥

(ज्ञानोदय)

सिंह चिह्न से चिह्नित प्रभु ने, सिंह देह में सम्यक् पा ।
 मोक्षमार्ग प्रारम्भ किया था, सुख पाने निज आत्म का ॥
 अन्तिम के इन तीर्थकर ने, अन्तिम का पुरुषार्थ किया ।
 जिससे अन्तिम गति को पाकर, अन्त रहित सुख प्राप्त किया ॥ 2 ॥
 मोह कर्म की महाशक्ति को, नाशा सो महावीर कहे ।
 चार घातियाँ नाश किए सो, हम तुमको अतिवीर कहे ॥
 ज्ञान आपका सर्वोत्तम अति, वृद्ध हुआ है बढ़ा हुआ ।
 अतः आपको वर्द्धमान कह गौरव अनुभव आज हुआ ॥ 3 ॥
 श्रेष्ठ बुद्धि से उपादेय को, हेय वस्तु को जान लिया ।
 उत्तम-उत्तम गति पाई सो, सन्मति हमने नाम लिया ॥
 तीन लोक पर जय पाने से, गर्वित जो अति काम हुआ ।
 उसको जीता सो हे स्वामी! वीर प्रभु यह नाम हुआ ॥ 4 ॥
 चाँदनपुर के टीले में जब, आप बिम्ब शुभ राजित था ।
 गाय झराती दूध वहाँ पर, तो ग्वाला अति विस्मित था ॥
 टीला खोदा तो उसमें से, महावीर की प्रतिमा जी ।
 प्रकट हुई थी जिसे देखकर, सबने गायी महिमा जी ॥ 5 ॥
 तब से ही वह टीला अब तक, महावीर जी क्षेत्र बना ।
 दर्श मात्र से भव्य जनों के, पाप नाश का क्षेत्र बना ॥

शुद्ध-बुद्ध चैतन्य आत्म में, यदा आप तल्लीन हुए।
 किया महा उपसर्ग रुद्र ने, तो भी निज में लीन हुए॥6॥
 राजगृही में महावीर का, समवसरण जब आया था।
 श्रेणिक नृप ने श्रावक बनकर, उत्तम दर्शन पाया था॥
 प्रश्न पूछकर साठ सहस श्री, तीर्थकर पद पाने का।
 बन्ध किया था पथ पाया था, सुख पाने शिव जाने का॥ 7॥
 मोक्ष रमा की अति इच्छा सो, लोभी आप कहाते हैं।
 लंगोटी भी नहीं रखते, निर्लोभी हमें सुहाते हैं॥
 शिव ललना से राग रहा सो, रागी तुम्हें बताते हैं।
 राग-द्वेष मद मोह मिटा सो, वीतराग हम ध्याते हैं ॥ 8॥
 कर्म शत्रु को नष्ट किया सो, हिंसक तुमको हम कहते।
 अभयदान तुम देते सबको, महा अहिंसक हम भजते॥
 भाव शुभाशुभ नष्ट हुए सो, शुद्धात्म में तुम रहते।
 पाप कर्म सब नाश किए सो, सुखसागर में तुम रमते॥ 9॥
 त्रिशला की गोदी में जनमे और अजन्मा कहलाते।
 पुनः नहीं लो जन्म धरा पर, तब तो सुर नर गुण गाते॥
 मरण किया है पण्डित-पण्डित, फिर भी तुम हो नाथ अमर।
 सिद्धालय से कभी न लौटो, गुण गाते है देव अमर॥10॥
 देह नहीं हो जर-जर स्वामी, नहीं भाव ही जर-जर हो।
 जरा रोग से पीड़ित ना हो, इसीलिए तुम अजर अहो॥
 रही अमावस काली थी पर, वह भी उज्ज्वल धवल हुई।
 महावीर के मोक्ष गमन से, सारी विधियाँ चमन हुई॥11॥
 पाँच शतक शिष्यों का गुरु जो, मिथ्यामत का पोषक था।
 ऐसे गौतम इन्द्रभूति को, बना पाप का शोषक वा॥
 समवसरण में प्रथम सुगणधर, बना धर्म से जोड़ दिया।
 आप भक्ति से उनने भी भव-भव से नाता तोड़ लिया॥12॥
 उस ही भव में मुक्ति रमा से, विवाह करके शिव पाया।
 लौट न आवे कभी लोक में, हमने उनको सिर नाया॥

रत्नदीप से भी बढ़कर के, ज्ञान आपका विस्तृत है।
 तीन लोक को करे प्रकाशित, तीन लोक से वंदित है॥13॥
 लोकोत्तर है आप अलौकिक, अनुपम अद्भुत सुखमय है।
 महावीर अतिवीर प्रभु का, भक्त बनेगा शिवमय रे॥
 लोकोत्तम है नहीं लोक में, कोई तुमसे उत्तम है।
 सेवा करते आप चरण की, बन जाते हैं सत्तम वे॥14॥
 त्रिभुवन में श्री महावीर सा, शरण न कोई हो सकता।
 आप शरण में नहीं आये तो, भव बंधन नहीं खो सकता॥
 तीर्थराज हो तीर्थनाथ हो, तीर्थकर में अन्तिम हो।
 तीर्थकर हो क्षेमंकर हो, तीर्थभूत अभिनन्दित हो॥15॥
 महावीर हो महाधीर हो, धर्म सुनायक नेता हो।
 करे समर्पित जीवन जो भी, बन जावे शिव नेता वो॥
 महाधैर्य है महावीर्य है महाशौर्य है जिनवर में।
 महावीर तुम धैर्यवान हो, सौख्यवान हो त्रिभुवन में॥16॥
 वर्द्धमान के जन्ममात्र से, नरकों में भी शांति हुई।
 भूमण्डल पर दीन दुखी के, जीवन की भी क्लांति गई॥
 भारत भू पर पाप ताप का, हुआ यदा विस्तार हहा।
 बलि देने में पापात्मा जब, हुए अग्रणी हाय वहाँ॥17॥
 सन्मति स्वामी के दर्शन कर मुँह मोड़ा था हिंसा से।
 बने मोक्ष के पथिक श्रेष्ठतम, लगकर परम अहिंसा में॥
 देव सुरासर नर नारक को, निगोदियों को पशुओं को।
 चक्रेश्वर को राजाओं को, जीत लिया सुरवधुओं को॥18॥
 बजा दिया है डंका विजयी होकर हा! उद्दण्ड हुआ।
 चढ़कर आया तुम्हें जीतने, जीतूंगा यह सोच हहा॥
 ऐसे काम मल्ल को ओहो, बाल अवस्था में तुमने।
 मार भगाया मूल उखाड़ा, सो भागा था इक पल में॥19॥
 लौट न देखा सपने में भी, कैसे देखे किस मुख से।
 देखेगा इन महावीर को लीन हुए हैं ये निज में॥

बाल ब्रह्मचारी बन करके, शिक्षा दी थी सब जग को।
 कैसे जीते विषय वासना, कैसे पावे निजपन को॥ 20 ॥
 मात्र बहत्तर वर्ष आयु थी, उसमें से श्री सन्मति ने।
 करी तपस्या उत्तम बारह, वर्ष मात्र तक सन्मति ने॥
 चार घातिया कर्म नाशकर, केवल पाया प्रभुवर ने।
 तीस वर्ष उपदेश सुना था, समवसरण में भविजन ने॥ 21 ॥
 दिव्यध्वनि सुन छह-छह घटिका, तीनों संध्याकालों में।
 उस ही ध्वनि को गणधर स्वामी ने, गूँथा था ग्रन्थों में॥
 उन ही शास्त्रों से अद्यावधि धर्म जानते शिवपथ भी।
 पाप काटते पुण्य कमाते सुनते बातें सुखपथ की॥ 22 ॥
 अहो वीर के शासन में ही, हम सब अब तक जीवित हैं।
 जयवतें जयवतं रहे नित, जिन शासन यह पृथिवी पे॥
 महावीर के गुण गाने में, पार न कोई पा सकता।
 सुरगुरु भी गा थक जायेगा, पार न उनके जा सकता॥ 23 ॥
 फिर मैं कैसे आप गुणों को, गा पाऊँ हे वीर प्रभो।
 तो भी गाये भक्ति लहर में, खुश होकर के आज विभो॥
 अल्प बुद्धि है अल्प शक्ति है, मुझमें थोड़ी प्रतिभा है।
 सो स्वामी यह जयमाला मैं, पूर्ण करूँ तब महिमा है॥ 24 ॥
 छन्द ज्ञान नहीं अर्थ ज्ञान नहीं, ज्ञान रहा नहीं आगम का।
 अलंकार का ज्ञान नहीं है, नहीं ज्ञान सुखसागर का॥
 किन्तु वीर में महावीर में, अचल भक्ति है श्रद्धा है।
 हृदयकमल के सिंहासन पर, केवल प्रभु की प्रतिमा है॥ 25 ॥
 वीर प्रभु बस तुम ही मेरे, शरण रहे हैं उत्तम हैं।
 मोक्षमार्ग में मार्ग प्रकाशक, नेता हैं सर्वोत्तम हैं॥
 आप भक्ति से स्वामी मेरा, रत्नत्रय यह पूर्ण बने।
 पाप पंक मिट जावे जीवन, सौख्य शांतिमय पूर्ण बने॥ 26 ॥
 इस ही फल की इच्छा से यह विधान मैंने आज लिखा।
 वर्द्धमान महावीर प्रभु अब, मिल जावे बस मोक्ष शिला॥

प्रमादवश यदि गल्ती होवे, शोध पढ़ो हे प्राज्ञ जनों।
 महावीर की पूजा करके, मोक्ष पथिक ही आप बनो ॥ 27 ॥
 नुं हीं श्रीं क्लीं ऐं श्री वर्द्धमानमहावीरजिनेन्द्रेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीर्वादः

वर्द्धमान श्री महावीर का, विधान जो भी करता है।
 सुरनर किन्नर के सुख पाकर, शिव ललना को वरता है॥
 पुनः लौट नहिं आता जग में, अमितकाल तक सुख पावे।
 सिद्ध पंक्ति में रहे विराजित, पूजक के दुख मिट जावे॥
 इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

प्रशस्ति

क्षेत्र रहा विन्ध्यावली, बिजौलिया है ग्राम।
 अहिजपुर अहिच्छत्रपुर, ये दोनों भी नाम ॥ 1 ॥
 इसके ही इतिहास में, बतलाते विद्वान्।
 इसी स्थान पर पार्श्व ने, पाया केवलज्ञान ॥ 2 ॥
 विवेक सिन्धु की पाँचवीं, शिष्या जो विज्ञान।
 अल्पबुद्धि ने भक्ति से, पाने पंचम ज्ञान ॥ 3 ॥
 विद्या गुरु आशीष से, रचकर करे प्रणाम।
 इस भू पर श्री वीर का, रहे सदा ही नाम ॥ 4 ॥
 पार्श्वनाथ के दर्श कर, आह्लादित है चित्त।
 मन केकी यह नाच कर, धारे उर में नित्य ॥ 5 ॥
 माघ कृष्ण की तिथि रही, नवमी है शनिवार।
 वर्द्धमान अतिवीर का, विधान जग में सार ॥ 6 ॥
 वीर मोक्ष चालीस है, पाँच बीस सौ जान।
 आये प्रभु के द्वार हम, कर्म नाश की ठान ॥ 7 ॥
 इसी क्षेत्र पर पूर्ण कर, विधान को मैं आज।
 फल में माँगूँ हे प्रभो, मिले आत्म का राज ॥ 8 ॥

आर्यिका श्री विज्ञानमती माताजी : परिचय

पूर्वनाम	: लीला
पिता	: श्री बालूलाल जी
माता	: श्रीमती कमला जी
जन्मतिथि	: मिति आश्विन शुक्ला पंचमी, सन् 1963
जन्मस्थान	: भीण्डर (उदयपुर-राजस्थान)
लौकिक शिक्षा	: हाईस्कूल
परिणय	: भीण्डर में ही, 18 वर्ष की आयु में, सन् 1981
गृहत्याग	: परिणय के 18 माह बाद
प्रतिमाधारण	: अलोध में 5 प्रतिमा, कुचामन में 9 प्रतिमा के व्रत
आर्यिकादीक्षा	: 2 फरवरी 1985, कूकनवाली (कुचामनसिटी-राजस्थान)
दीक्षागुरु	: परम पूज्य आचार्यकल्प श्री विवेकसागर जी मुनिराज
रुचियाँ	: स्वाध्याय, तप-त्याग, चिन्तन-मनन, लेखन
विशिष्टता	: मधुर, गम्भीर पौराणिक शैली में प्रवचन
दीक्षित शिष्याएँ	: आर्यिका श्रीवृषभमती, आदित्यमती, पवित्रमती, गरिमामती, सम्भवमती, वरदमती, शरदमती, चरणमती, करणमती, शरणमती।